कुरआन मजीद की चार खूबियां

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

सूरे यूनुस में है:''लोगो तुम्हारे पास परवरदिगार की जानिब से एक ऐसी चीज़ आ गई है जो मौइज़त है, दिल की बीमारियों के लिये शिफा है और हिदायत व रहमत है, उन लोगों के लिये जो इस पर यक़ीन रखते हैं''। (आयतः ५७)

इसमें कुरआन की चार खूबियां बयान की गई हैं। १. ''मौइज़त'' है यानी दिल में उतर जाने की दलीलों और आत्मा को प्रभावित करने वाले तरीक़ों से इन तमाम बातों की प्ररेणा देता है, जो भलाई और हक़ की बातें हैं और उन तमाम बातों से रोकता है जो बुराई और असत्य की बातें हैं क्योंकि अरबी में वअ्ज़ का अर्थ केवल नसीहत नहीं है बल्कि ऐसी नसीहत है जो प्रभावी दलीलों और दिल में बैठ जाने वाली दलीलों से की जाए।

२. ''शिफाउन लिमा फिस्सुदूर'' दिल की तमाम बीमारियों के लिये शिफा का नुस्ख़ा है, जो व्यक्ति या जो गरोह इस नुस्ख़े पर अमल करेगा, उसके दिल हर तरह की खराबियों और बुरी चीज़ों से पवित्र हो जाएंगे। याद रहे अरबी में ''क़ल्ब'' ''फुवाद'' और ''सदर'' के शब्द जब कभी ऐसे मोके पर बोले जाएं जैसा यह मोक़ा है तो इसका अर्थ इन्सान की आंतरिक हालत होती है यानी जेहन व फिक्र की कुव्वत, अक़्ल, जजबात, अख़लाक़ व आदात अन्दरूनी हिस्सियात, वह अंग तात्पर्य नहीं होता जो शरीर विज्ञान का दिल और सीना है।

३. ''हुदन'' है यानी यक़ीन करने वालों के लिये एक हिदायत है।

४. ''रह्मतुल लिलमोमिनीन'' यक़ीन करने वालों के लिये रहमत का सन्देश है यानी जुल्म, सख्ती, नफरत व बुग्ज़ से संसार को छुटकारा दिलाता है। दया, प्रेम और अम्न व सुरक्षा की रूह से आबाद करता है।

यह कुरआन मजीद की खूबियों का सिर्फ दावे वाला एलान ही नहीं था, बल्कि इस की सच्चाई की सबसे प्रभावी दलील भी थी। अगर एक शख्स दावा करे कि वह तबीब (डाक्टर) है तो उसके दावे की जांच का सबसे ज़्यादा सहल और निर्णायक तरीक़ा यह होगा कि देखा जाए कि उसके एलाज से बीमारों को शिफा मिलती है या नहीं? कुरआन ने भी जगह जगह यही जांच मुनकिरों के सामने पेश की है। उसने (कुरआन) ने कहा मैं नुस्ख़-ए-शिफा हूं। सुबूत में मोमिनों और मुत्तक़ियों की दलील पेश कर दी जो उसके दारूश शिफा (उपचार ग्रह, हास्पिटल) में तैयार हुई थी। आज भी इसकी यह दलील उसी तरह मज़बूत है जिस तरह कुरआन के अवतरण काल में मज़बूत थी। अगर इस (कुरआन) ने अरब जाहिलियत के रूह व दिल के मरीज़ों में से अबू बक्र रज़िअल्लाहो तआला अन्हो, उमर रज़िअल्लाहो तआला अन्हो, अली रज़िअल्लाहो अन्हो, सलमान रज़िअल्लाहो अन्हो और अबू ज़र रज़िअल्लाहो अन्हो जैसी तन्दुरूस्त रूहें पैदा कर दी थीं तो क्या इस (कुरआन) के नुस्खए शिफा में शक किया जा सकता है?

सूरे बनी इस्राईल में फरमायाः''निसन्देह यह कुरआन उस राह की तरह रहनुमाई करता है जो सबसे ज़्यादा सीधी राह है'' (आयत-९)

कुरआन ने अपनी जितनी खूबियां बयान की हैं उनमें सबसे व्यापक खूबी यही है कि जिन्दगी और कामयाबी के हर गोशे में उसकी रहनुमाई (मार्गदर्शन) सीधी से सीधी बात के लिये है, किसी तरह का टेढ़ापन, किसी तरह का उलझाव, किसी तरह की अतिश्योक्ति इसकी रहनुमाई में नहीं हो सकती। यही हकीकत दूसरी जगह ''सिरातुम मुस्तकीम'' और ''अददीनुल कैइम'' से परिभाषित की गई। (''रहमते आलम'' से साभार पृष्ठ-१२१-१२२)

मासिक

इसलाहे समाज

सितंबर 2019 वर्ष 30 अंक 9

मुहर्रमुल हराम 1441 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	कुरआन मजीद की चार खूबियाँ	2
2.	इस सच्चाई का सामना करें	4
3.	कुरआन का मक़सद	6
4.	जैसी संगत वैसा फल	8
5.	खुशनसीबी अल्लाह के आज्ञापालन...	10
6.	यह तारीखी और बेमिसाल कारनामा...	12
7.	स्वच्छता और स्वास्थ्य	15
8.	12 वाँ आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स	17
9.	प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्यारी बातें	18
10.	सम्माननीय अमीर की नद्वतुल हज अल कुबरा में शिर्कत	20
11.	अम्न व शान्ति और इस्लाम	21
12.	इस्लाम में आत्म हत्या हराम है	22
13.	भौतिकवाद की तरफ बढ़ता इन्सान	26
14.	प्रेस रिलीज़	27
15.	विज्ञापन	28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

इस सच्चाई का सामना करें

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों में ज़रा सी भी नाचाक़ी और नफ़रत न हो। हमारा खान दान हंसी खुशी रहे, हमारा समाज एक दूसरे से जुड़ा और मज़बूत रहे। हमारा समाज ठीक रहे और विकास की तरफ अग्रसर ही नहीं बल्कि तेज़ रफतार रहे। हमारे बच्चे उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण से सुसज्जित हों और पालन पोषण भी अत्यंत बेहतर और शानदार हो। यहां तक सब ठीक ठाक सोचते हैं मगर गड़बड़ उस वक़्त होने लगती है जब हमारी यही सोच दूसरे के बच्चों, दूसरों की औलाद, दूसरे समाज और दूसरी जमाअत व मिल्लत और देश के लिये नहीं रहती। यह सोच और फिक्र अगर यह दिशा ले ले कि हम तरक़्की तो करें मगर दूसरे पीछे रह जाएं और हमारे बच्चे फले फूलें मगर दूसरों के बच्चे मुर्झा जाएं और खिल न सकें तो जाहिर है कि तरक्की और विकास की राह हमने बन्द कर दी और अगर यह सोच और तगड़ी होजाए और सोच का धारा व्यवहारिक रूप ले ले कि दूसरों की राह में हम रूकावट बनने लगें या उनको पराजित करने का प्रयास करेने लगें तो यह बहुत बड़ा और महा नुकसान है और यहीं से उल्टा विकास शुरू यानी रूक जाता है। सच्चाई तो यही है कि हम जो अपने लिये पसन्द करते हैं वह दूसरों के लिये पसन्द करें। और अपने और अपनों के लिये जो ना पसन्द करते है दूसरों के लिये ठीक उसी तरह की निय्यत व जज़बा रखें और यही इन्सान का हकीकी जौहर और एनर्जी है। इसी को एक हदीस में इस तरह बयान किया गया है। पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया तुम में से कोई भी शख्स उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाइयों के लिये वही पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है। (बुखारी, मुस्लिम) और इस राज़ और हकीक़त को जो जान जाता है वही कामयाब और ईमानदार इन्सान है। इसी में दिल और जिगर को असली सुकून है, इसी में तरक्क़ी का राज निहित है। इसी से व्यक्ति व जमाअत और कौमें विकास करती हैं, यह मामूली दुनिया जन्नत निशां बन जाता है और मामूली इन्सान महान इन्सान बन जाता है हमें जिस सच्चाई का सामना करना चाहिए वह यह है कि हम भी सिर्फ अपने लिये सोचते हैं और अगर औरों के लिये सोचते हैं तो बुरा सोचते हैं लेकिन लोगों से अच्छाई की आशा और उम्मीदें रखते हैं और दो क़दम आगे बढ़कर अपने बारे में उनकी अपनी जैसी इस सोच पर नाराज़ होते हैं, सख़्त आलोचना करते हैं और हर तरह की बुराई और पिछड़ेपन का प्रतीक समझते हैं। अगर यही सब कुछ करने लग जाएं तो दुनिया का क्या हाल होगा। जिन्दगी अजीरन हो जाएगी, समाज में रहना दूभर हो जाएगा जैसा कि कुछ न कुछ इसका परिणाम आज भी भुगत रहे हैं। फिर इस सच्चाई का सामना करने से कतरा रहे हैं। वैसे भी खुद को बुराई में लिप्त रखना और दूसरों को नसीहत करना बदतरीन बीमारी है। यह भी घमण्ड और हद से ज़्यादा आशाओं की श्रेणी में आता है और यह जहाँ जहाँ जाता है और जिस दिल और समाज में समाता है नासूर बनकर मानव-शरीर और समाज देश एवं समुदाय की रूह को तबाह कर देता है। आज हर स्तर पर इसे महसूस किया जा रहा है यहां तक कि क़रीबी रिश्तेदारों में

विभिन्न भेस और नई शकलों में प्रवेश कर गया है इसलिये जैसे जैसे बनाने और संवारने की बात आती है दिन ब दिन बिगड़ती चली जाती है।

हमारा ग़ैर भी सिर्फ अपने लिये सोचता है, हम गैरों का भला नहीं चाहते तो वह हमारा भला कब चाहने लगा? हम मौक़े की तलाश में रहते हैं कि सब कुछ बिना साझीदारी के हमारा ही हो जाए। दूसरों को भी तो यह हक़ होना चाहिए और जिस दिन व्यक्ति और समाज में यह सोच बैठ जाए तो समझ लीजिये कि बहुत से मसाइल यूं ही हल हो जाएंगे।

हक़ तो यह है कि अगर हम वास्तव में अपना भला चाहते हैं तो सबका भला चाहें वर्ना अकेला चना कया भाड़ फोड़ेगा, अगर चारों तरफ गन्दगी और बदबू का भबका फूट और उठ रहा हो तो आप अकेले कितना सुगन्धों को बिखेरते रहेंगे। घातक और संक्रामक बीमारी का तूफान आया हो और वबाई रूप ध ाारण कर ले तो आप अकेले कितने दिनों तक स्वस्थ्य रहेंगे। इसी लिये कुरआन के कथानानुसार ''ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को इस आग से बचाओ''। (सूरे तहरीक-६) के कर्तव्य को अदा करते रहिए। ''पस इस हुक्म को जो आप को किया जा रहा है खोल कर सुना दीजिए।'' (सूरे हज्-६४) के कर्तव्य को भी न भूलें।

विकसित और स्वस्थ्य समाज की पहचान यह है कि समाज के लोग एक दूसरे के शुभचिंतक होते हैं और इसी जजबे से जालिम का हाथ पकड़ते और मज़लूम की मदद करते हैं और जिस समाज से यह खूबी उठ जाती है तो वह समाज तरक्क़ी की दौड़ से पीछे रह जाता है और इस तरह से एक दिन तबाह व बर्बाद हो जाता है और तबाही व बर्बादी आती है तो अंधी और नाबीना (दृष्टिहीन) बन कर आती है वह किसी अच्छे और बुरे में अन्तर नहीं करती है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''सो जब वह इसको भूल गए जो उनको समझाया जाता था तो हमने उन लोगों को तो बचा लिया जो इस बुरी आदत से मना किया करते थे और उन लोगों को जो कि ज़्यादती करते थे एक सख्त अज़ाब में पकड़ लिया इस वजह से कि वह बेहुकमी (आदेश का उल्लंघन) किया करते थे''। (सूरे आराफ-१६५) यह वह सच्चाई है जिस का सामना करना मुश्किल है लेकिन ज़रूरी भी है कि स्वयं अच्छे बनें और देश एवं समाज को अच्छा बनाने का प्रयास करें, स्वयं भी तरक्की करें, और दूसरों को भी आगे बढ़ने दें, किसी की राह में रूकावट न बनें, जब देश वासियों के अन्दर यह जजबा और रूझहान मजबूत हो गा तो खानदान, समाज और देश में इसी का चलन होगा और नफरत व आतंक का अन्त होगा और सब मिल जुल कर आगे बढ़ें गे और सभी विकास एवं समृद्धि से लाभन्वित हो जाएंगे। कोशिश हमारी तरफ से होनी चाहिए और पूरा करने वाला अल्लाह है बल्कि इन तमाम स्टेजों में इसी शुभचिंतन की ज़रूरत और अल्लाह को प्रिय है और पूरी मानवता की भलाई है। कुरआन की इस आयत ''तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों की भलाई के लिये बरपा की गई हो'' में यह पाठ दिया गया है और पूरे संसार के लिये दया आगर पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० की तरफ से यही सन्देश और निमंत्रण है। पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः दीन भलाई का नाम है हम (सहाबा किराम रज़िअल्लाहो अन्हुम) ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल स०अ०व० भलाई किस के लिये? आप स०अ०व० ने फरमाया भलाई अल्लाह के लिये है, उसकी किताब के लिये है, उसके रसूल के लिये है, मुसलमानों के रहनुमाओं के लिये है और आम जनता के लिये है। (बुखारी, मुस्लिम)

कुरआन का मक़सद

नौशाद अहमद

कुरआन अल्लाह की तरफ से पूरी मानवता के लिये अंतिम सन्देश है जो पूरे संसार को सच्चे मार्ग का उपदेश देता है, सही और गलत में अन्तर सिखाता है, ईमानदारी की शिक्षा देता है, कामयाबी की कसौटी है, हर मामले में इन्सान की रहनुमाई (मार्गदर्शन) करता है, कुरआन की एक खूबी यह भी है कि वह दुनिया की पिछली क़ौमों के बारे में जानकारी देता है खास तौर से पथभ्रष्ट कौमों की तबाही बर्बादी के बारे में ज्ञान देता है, इस पहलू से देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि इसमें पिछली कौमों की तारीख़ भी मौजूद है। कुरआन की शुरूआत सूरे फातिहा से होती है जिसका अर्थ यह है कि ''सब तारीफ (प्रशंसा) अल्लाह के लिये है जो तमाम संसार का पालने वाला है, बड़ा मेहरबान रहम करने वाला, बदले के दिन (यानी क़्यामत) का मालिक है। हम केवल तेरी ही इबादत (पूजा) करते हैं और केवल तुझ ही से मदद चाहते हैं हमें सीधी (और सच्ची) राह दिखा उन लोगों की राह जिन पर तूने इंआम किया, उनकी नहीं जिन पर गज़ब किया गया और न गुमराहो की'' (सूरे फातिहा,१-७) कुरआन की इस सूरे में कुरआन के उददेशों को स्पष्ट रूप से बता दिया गया है। आज हम कुरआन के मकसद से कितना गाफिल हो गए हैं इसका अनदाज़ा इस हकीकत से लगाया जो सकता है कि आज हर घर में कुरआन मौजूद है लेकिन बहुत कम ही लोगों को कुरआन को समझने की तौफीक़ होती है, भागदोड़ और व्यस्त जीवन ने हमें कुरआन के अधिकारों को निभाने से दूर कर दिया है, होना तो यह चाहिए था कि हम स्वयं कुरआन को समझते और इस पर अमल करके अपने जीवन को कुरआन की शिक्षाओं की रोशनी में बेहतर और आइडिल बनाने की कोशिश करते लेकिन आज हालत यह है कि हमने कुरआन के अधिकार को भूल कर अपनी जीवन की समस्याओं का रोना रोते हैं जबकि कुरआन ने पूरी मानवता के लिये हर समस्या का समाधान पेश किया है। आज इस्लाम धर्म के बारे में गलत फहमी फैलाई जा रही है और गलत फहमी बढ़ती ही जा रही है तो इसकी सब से बड़ी वजह यही है कि न हम कुरआन की शिक्षाओं पर स्वयं पूरी तरह से अमल कर रहे हैं औ न कुरआन की शिक्षाओं को दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश ही कर रहे हैं।

कुछ लोग कुरआन को अपने घर में न रख कर महज़ इस गलत फहमी में मस्जिदों में रख आते हैं कि इसको घर में रखने से इस का असम्मान होगा जबकि कुरआन का सम्मान यह है कि इसकी तिलावत की जाए, इसकी शिक्षाओं पर अमल करके इस्लाम की असल छवि को पेश किया जाए ताकि दूसरों को कुरआन की अहमियत का पता चले और लोगों को यह मालूम हो सके कि कुरआन पूरी मानवता की भलाई के लिये है, मानव जगत का शुभचिंतक है, वह हर इंसान को सफलता की ओर ले जाना चाहता है। हमारे इस प्रयास से लाभ यह होगा कि लोगों की गलत फहमी भी दूर हो गी और कुरआन का जो हक़ है वह भी अदा हो जाएगा। कुरआन अरबी भाषा में है, इसकी सबसे पहली सूरत से ही कुरआन का मकसद स्पष्ट हो जाता है, कुरआन के इस मकसद को मानव जगत तक पहुंचाने की ज़रूरत है, वर्ना गलत फहमी बढ़ती ही जाएगी।

सुधार की शुरूआत

इस दुनिया की ज़िन्दगी हर इन्सान के लिये आज़माइश की घड़ी है, इस संसार का हर हर पल उसके लिये बहुमूल्य है, अब यह इन्सान की अक़्ल पर निर्भर करता है कि वह इस कीमती पल को कैसे इस्तेमाल करता है, इन्सान को अल्लाह ने अक़्ल इसलिये दी है कि वह अच्छे और बुरे में अन्तर करे और अपने जीवन को अपने पालनहार के बताए गये रास्ते के अनुसार व्यतीत करे।

किसी समाज में बुराई उस वक़्त पनपूती है जब समाज के हर व्यक्ति के अन्दर से अच्छे और बुरे का एहसास ख़तम हो जाता है और उसके अन्दर से आत्मनिरिक्षण का जज़बा खतम हो जाता है। हर इन्सान के अन्दर कुछ न कुछ कमियां पायी जाती हैं कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि वह किसी भी तरह की कमी से पवित्र है, और किसी के अन्दर यह ख्याल नहीं उभरना चाहिए कि वह समाज का सबसे अच्छा व्यक्ति है, बल्कि इसके विपरीत होना यह चाहिए कि वह अपने अन्दर की कमी का निरीक्षण करके उसको दूर करे।

समाज के अन्दर से बुराई को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि समाज का हर व्यक्ति पहले अपने अन्दर पाई जाने वाली कमियों को दूर करे, अगर इसी तरीक़े पर हर इसान अमल करना शुरू कर देगा तो बुराई धीरे धीरे स्वयं समाप्त हो जाएगी।

दुनिया में नेकी करने का कोई समय तय नहीं है इन्सान के होश संभालते ही नेकी का सिलसिला शुरू हो जाता है। कुछ लोग यह सोचते हैं कि अभी तो पूरी उमर बाक़ी है, सुधाार और इबादत का काम होता रहेगा लेकिन यह किसी को नहीं मालूम है कि उसकी ज़िन्दगी की मुददत क्या है, वह इस दुनिया में कब तक रहेगा, यह इतनी बड़ी गलत फहमी और भूल है जिस में इन्सानों की बहुत बड़ी आबादी लिप्त है।

बहुत से लोग यह तर्क देते हैं कि वह रोज़गार और अन्य बुनियादी कामों में इतने व्यस्त हैं कि उनको सुधार और अपने पालनहार की इबादत (पूजा) का मौक़ा ही नहीं मिलता है, दिन भर की भागदौड़ से जब घरों को वापस जाते हैं तो फिर इबादत की तरफ ध्यान ही नहीं जाता है। जब कि यह तर्क इतना बोदा और कमज़ोर है जिस को स्वीकार करना तर्क संगत नहीं है। यह इंसान की अक़ल की कोताही है कि वह अपनी ज़िन्दगी को बेहतर से बेहतर बनाने के लिये पूरे दिन भागदौड़ और मेहनत करता है लेकिन वह अपने पालनहार की इबादत और अपने आप को सुधाारने के लिये वक़्त नहीं निकाल पाता। हर इंसान को मालूम होना चाहिए कि दुनिया की यह ज़िंदगी अस्थाई है यहां पर कामयाब हो जाना असल कामयाबी नहीं है असल कामयाबी आखिरत (मरने के बाद वाली जिन्दगी) में है जहां पर केवल उसका नेक कर्म काम आएगा और उसके हर कर्म को सत्य और असत्य की तराजू पर तौला जाए गा और वहाँ पर केवल सत्य ही काम आए गा।

इस लिये हर इन्सान को इबादत के साथ साथ समाज सुधार का काम करते रहना चाहिए, किसी खास वक़्त और मुददत का इन्तेज़ार नहीं करना चाहिए। काम के दौरान भी वक़्त निकाल कर अपने पालनहार को याद करते रहना चाहिए ताकि हमारी दोनों दुनिया कामियाब हो।

❑ ❑ ❑

जैसी संगत वैसा फल

सईदुर्रहमान सनाबिली

यह सच है कि इन्सान की पहचान उसके अपने साथियों से होती है, इन्सान अपने दोस्त के आदात और तरीक़ों से बहुत प्रभावित होता है और असर भी डालता है। आप अपने आस पास की समीक्षा करें तो इस हकीक़त को आसानी से समझ लेंगे कि नेक लोगों की संगत में रहने वाले इन्सान की दुनिया प्रशंसा करती है, उसे विश्वसनीय और भरोसे मन्द समझती है, ऐसे इन्सान के बारे में सन्देह नहीं किया जाता है, अगर समाज में कोई वारदात होती है तो शक की सूई इस पर नहीं जाती और अगर असमाजिक तत्व इस पर झूठा आरोप लगाते हैं तो इस की तरफ से दिफा करने वाले लोगों की एक बड़ी तादाद मौजूद होती है लेकिन जो बुरे लोगों की संगत में रहते हैं तो समाज के लोग इसे भी बुरी नज़रों से देखते हैं, समाज में ऐसे इन्सान की छवि नकारात्मक हो जाती है। यही वजह है कि इस्लाम धर्म ने अपने अनुयाइयों को अच्छी संगत अपनाने के बारे में पूरे तौर पर मार्गदर्शन और निर्देश दिया है कि किन लोगों की संगत हमारे लिये लाभकारी है, किन लोगों को अपना दोस्त बनाया जा सकता है और वह कौन लोग हैं जिनकी संगत से अच्छे परिणाम की उम्मीद की जा सकती है। इस्लाम ने ऐसे लोगों की निशानदेही की है जिनकी दोस्ती हानिकारक है और यह भी बता दिया कि बुरे लोगों की संगत या साथ रहने से दूर रहना चाहिए।

हमें यह मालूम होना चाहिए कि लोगों के स्वभाव अलग अलग होते हैं कुछ तो भलाई के सन्देश्वाहक होने की वजह से भलाई की तरफ आमंत्रित करते हैं और कुछ लोग बुरे स्वभाव की वजह से बुराई की तरफ खींचते हैं जैसा कि हदीस में भी आया है। पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः निसन्देह कुछ लोग नेकियों के जारी करने वाले और बुराइयों को बन्द करने वाले होते हैं और कुछ लोग बुराइयों को जारी करने वाले और नेकियों को बन्द करने वाले होते हैं। खुश्खबरी है उस शख्स के लिये जिसको अल्लाह नेकी को जारी करने वाला बना दे और बर्बादी है उसके लिये जिसके हाथों को अल्लाह तआला बुराइयों को जारी करने वाला बना दे। (सुनन इब्ने माजा-२३७ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को हसन क़रार दिया है।

अबू मूसा अश्अरी रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया नेक साथी की मिसल कस्तूरी बेचने वाले इन्सान जैसी है और बुरा साथी लोहार जैसा है कस्तूरी (खुश्बू) बेचने वाला या खुद से तुझे खुश्बू दे दे गा या तू उससे खरीद लेगा (अगर यह दोनों बातें न हुईं तो) कम से कम तुझे उसकी खुश्बू तो हासिल होती रहेगी। रहा लोहार या तो वह तुम्हारे कपड़े जला दे गा या फिर तुझे नागवार धुवां तो फाँकना ही पड़ेगा। (सहीह बख़ारी ५५४४, सहीह मुस्लिम ६३८२)

यह हदीस स्पष्ट तौर पर बताती है कि अच्छे की संगत जहां इन्सान के रहन सहन, तौर तरीक़ा, सोच व फिक्र, आदात, चरित्र का पता देती है और अच्छा साथी दीन दुनिया की भलाइयों की प्राप्ति का ज़रीआ है और बुरी संगत और बुरे इन्सान के

साथ उठना बैठना या संगत इन्सान के फिक्र व ख्याल, तौर तरीक़ा और चरित्र के लिये हानिकारक है और सब पर बुरा असर डालता है। इमाम नौवी रह० ने इस हदीस की व्याख्या करते हुए लिखा है कि इस हदीस में भले लोगों, अच्छे आचरण व स्वभाव रखने वालों, संयमी, ज्ञानी और शिष्ट लोगों के साथ बैठने की फजीलत (श्रेष्ठता) बयान की गयी है और बुरे लोगों, चुगली करने, झूठी और लम्बी चौड़ी बातें करने वालों के साथ उठने बैठने से रोका गया है (शरह सहीह मुस्लिम ६/१८)

हाफिज़ इब्ने हजर असूक़लानी रह० ने इस हदीस के अन्तर्गत लिखा है कि जिस शख्स की वजह से दीन दुनिया का नुक़सान हो, उसके साथ उठने बैठने से हदीस में मना किया गया है और जिस की वजह से दीन दुनिया का नफा हो उसके साथ बैठने की हदीस में प्रेरणा दी गई है। (फ़तूहुल बारी ४/३२४)

नेक और अच्छे दोस्त के चुनाव का एक अहम फायदा यह है कि नेक लोगों की संगत से इंसान प्रभावित होता है क्योंकि इन्सान के लिये अपने साथी की पैरवी करना स्वभाविक बात है और उसके ज्ञान, अमल, आदात और उसके तौर तरीके से प्रभावित होता है। इस बात की व्याख्या अबू हुरैरह रजिअल्लाहो तआला अन्हो की इस हदीस से होती है जिसमें पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया आदमी अपने दोस्त के दीन (तौर तरीके) पर होता है इसलिये तुम में से हर एक को सोच समझ कर दोस्त का चयन करना चाहिए (सुनन अबू दाऊद ४८३३, सुनन तिर्मिज़ी २२७८, मुस्नद अहमद ८०४८ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है (सहीहुल जामे ३५४५)

> हम में से हर शख्स को चाहिए कि हम जिस शख्स के साथ उठते बैठते हैं उसके बारे में जांच पड़ताल कर लें कि ऐसा तो नहीं कि उसकी संगत हमारे लिये दीन से दूरी का सबब बन रही है तो ऐसी संगत और दोस्ती को छोड़ कर हमें ऐसे इन्सान से दूर रहने की भरसक कोशिश करनी चाहिए

यहां यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमें ऐसे लोगों की संगत अपनानी चाहिए जिनकी एमानतदारी और दीनदारी पर हमें इतमिनान हो। यही वजह है कि सम्माननीय असूलाफ (पूर्वज) कहा करते थे कि किसी इन्सान के बारे में जानना हो तो उसके दोस्त अहबाब के बारे में जानकारी हासिल कर लो तो उसकी हक़ीक़त मालूम हो जाएगी। अदी बिन ज़ैद रजिअल्लाहो तआला अन्हो अपनी कविता में कहते हैं :

कि आदमी के बारे में पूछने से पहले उसके दोस्तों के बारे में पूछ लो, क्योंकि आदमी अपने दोस्त की पैरवी करता है, जब तुम लोगों में मिल जुल कर रहो तो उनमें से बेहतर शख्स को अपना साथी बनाओ और बुरे को अपना साथी न बनाओ क्यों कि बुरा साथ तुझे भी हलाक कर देगा। (अदबुद दुनिया वद-दीन पृष्ठ १६७)

हम में से हर शख्स को चाहिए कि हम जिस शख्स के साथ उठते बैठते हैं उसके बारे में जांच पड़ताल कर लें कि ऐसा तो नहीं कि उसकी संगत हमारे लिये दीन से दूरी का सबब बन रही है तो ऐसी संगत और दोस्ती को छोड़ कर हमें ऐसे इन्सान से दूर रहने की भरसक कोशिश करनी चाहिए अगर हमने इस की इस्लाह कर ली तो यह अमल हमारे लिये सदकए जारिया साबित होगा। और अगर कोई दोस्ती या संगत इस्लाम से करीब कर रही हो तो हमें ऐसी दोस्ती की कद्र और सम्मान करना चाहिए।

खुशनसीबी अल्लाह के आज्ञापालन पर निर्भर

लेखः शैख अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अब्दुल मोहसिन अल बदर **अनुवादः अब्दुल मन्नान शिकरावी**

इन्सान का अच्छा नसीब अल्लाह के अधिकार में है जिसको अल्लाह की खुशी के बग़ैर हासिल नहीं किया जा सकता। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जो मेरी हिदायत (निदेर्शों) का पालन करे न तो वह बहके गा न तकलीफ में पड़ेगा'' (सूरे ताहा-१२३)

अर्थात हमने कुरआन को आप को खुश नसीब (सौभाग्यशाली) बनाने के लिये अवतरित किया है।

सौभाग्य अल्लाह के अधिकार में है जिसे अल्लाह तआला के आज्ञा पालन के बगैर हासिल नहीं किया जा सकता इसके अलावा जो तरीका अपनाया जाएगा वह वक़्त की बर्बादी के सिवा कुछ नहीं होगा।

सफलता अल्लाह के हाथ में है, वही मामलात में आसानी पैदा करने वाला, सीधे मार्ग की तरफ मार्गदर्शन करने वाला है, वही देता है वही रोकता है, वही इज़्ज़त देता है वही ज़िल्लत देता है, खुश्हाली और तंगी देता है, मालदारी और ग़रीबी भी वही देता है। वहीं हंसाता है वही रूलाता भी है जैसा कि कुरआन में है ''और यह कि वही हंसाता है और वही रूलाता है'' (सूरे नज़्म-४३)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''आप कह दीजिए ऐ मेरे माबूद (पूज्य) ऐ सारे संसार के स्वामी! तू जिसे चाहे बादशाही दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे, तेरे ही हाथ में सब भलाईयां हैं, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर (शक्ति रखने वाला) है'' (सूरे आले इमरान-२६)

कुरआन ने दूसरी जगह फरमाया ''बहुत बाबर्कत है वह अल्लाह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है''। (सूरे मुल्क-१)

खुशनसीबी का बुनियादी सिद्धांत इस बात पर ईमान लाना है कि अल्लाह ही पालनहार पैदा करने वाला, रोज़ी देने वाला, हालात को बदलने वाला, उपाय करने वाला, देने वाला, रोकने वाला, तंगी देने वाला और बर्कत देने वाला भी वही है। कजा व क़द्र का मामला उसी के हाथ में है उसके आदेश को टालने वाला कोई नहीं है, वह जो चाहता है वही होता है, अल्लाह पर ईमान और उसका आज्ञापालन करके ही खुशनसीबी मिल सकती है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''जो शख्स सत्कर्म करे मर्द हो या औरत लेकिन ईमान वाला हो हो हम उसे यक़ीनन बेहतर जिन्दगी अता फरमाएंगे और उनके अच्छे कर्मों का बेहतर बदला भी उन्हें अवश्य देंगे'' (सूरे नह्ल-९७)

खुशगवार और सुगम जिन्दगी वह है जिसमें तंगदस्ती न हो, तकलीफ, दुख और रंज व गम न हो, यही ईमान और आज्ञापालन की जिन्दगी है। इसी लिये इमाम इब्ने तैमिया रह० ने फरमाया : अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान सौभाग्य और कामयाबी की असल और बुनियाद है'' जिससे ईमान अलग हो तो सौभाग्य उससे स्वयं अलग हो जाती है और दुनिया व आखिरत में बदनसीबी उसका मुकददर बन जाती है। ईमान खुशी और खुशनसीबी का साधन है और दुनिया में एक इंसान के लिये अग्रिम जन्नत है। इमाम इब्ने तैमिया ने इस अर्थ को स्पष्ट करते हुए फरमाया दुनिया के

अन्दर जन्नत है जो दुनिया की जन्नत में दाखिल नहीं हुआ वह आख़िरत की जन्नत में भी दाख़िल नहीं होगा।''

इस से इमाम इबने तैमिया रह० का तात्पर्य ईमान की जन्नत, ईमान की लज़्ज़त और ईमान की मिठास और मोमिन का सुकून और इतमिनान है। पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में है। आप फरमाया करते थे ऐ बिलाल! नमाज़ के लिये हमारे सुकून व इतमिनान का सामान उपलब्ध करो''

इन्सान ईमान से ही सौभाग्यशाली होता है, इसी से इतमिनान नसीब होता है और आँखों को ठंडक हासिल होती है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''जो लोग ईमान लाए उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से इतमिनान हासिल करते हैं। याद रखो अल्लाह के ज़िक्र (याद) से ही दिलों को तसल्ली हासिल होती है। जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए उनके लिये खुश्हाली है और बेहतरीन ठिकाना है'' (सूरे रअ्द, २७-२८)

मालूम हुआ कि कामयाबी और सौभाग्य ईमान से जुडा हुआ है जैसा कि हदीस में है ''मोमिन का मामला भी कितना अजीब है उसके हर काम में भलाई ही भलाई है यह विशेषता इसके अलावा किसी को प्राप्त नहीं है, इसे अगर खुशी हासिल होती है तो वह शुक्र अदा करता है और इसमें उसके लिये भलाई ही भलाई है, इसी तरह अगर नुकसान और तकलीफ पहुंचती है तो वह सब्र करता है तो यह भी उसके भलाई और बर्कत की बात है।

मोमिन बन्दों की जिन्दगी तीन हालतों से खाली नहीं होतीः

(१) जब पाप करता है तो अल्लाह से मआफी मांगता है क्योंकि पाप करने के बाद एक मोमिन का ईमान उसे तौबा करने की प्ररेणा देता है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमता है।

''ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह तआला के सामने सच्ची ख़ालिस तौबा करो। (सूरे तहरीम-८) कुरआन में दूसरी जगह अल्लाह ने फरमायाः ''ऐ मुसलमानों! तुम सबके सब अल्लाह की जनाब में तौबा करो ताकि तुम मुक्ति पाओ'' (सूरे नूरे-३१)

२. मोमिन जब इनआम व इकराम से नवाज़ा जाता है तो वह शुक्र करता है अल्लाह तआला की तरफ से बन्दों के लिये असंख्य नेमतें हैं। बदन में, माल में औलाद में, घर बार में यानी तमाम मामलों में नेमतें ही नेमतें हैं। कुरआन कहता है ''अगर तुम अल्लाह के एहसान (भलाई) को गिनना चाहो तो इन्हें पूरे गिन नहीं सकते'' (सूरे इब्राहीम-३४)

अल्लाह की तारीफ करना, उसकी नेमतों पर शुक्रिया अदा करना यह सब सौभाग्य की बात है। बन्दा शुक्र अदा करके सौभाग्यशाली बन जाता है और नेमतों में बढ़ोतरी का सबब बनता है जैसा कि कुरआन में है और जब तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्र गुज़ारी करोगे तो बेशक मैं तुम्हें ज़्यादा दूंगा'' (सूरे इब्राहीम-७)

३. जब कठिनाई में पड़ता है तो सब्र करता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''कोई मुसीबत अल्लाह की मर्जी के बगैर नहीं पहुंच सकती जो अल्लाह पर ईमान लाए गा अल्लाह उसके दिल को हिदायत (सीधा रास्ता) देता है'' (सूरे तगाबुन-११)

सारांश यह है कि ईमान मोमिन की खुशी, दुख, मुसीबत और नेमत हर हाल में मददगार बनता है और इसी से दुनिया व आख़िरत में सौभाग्य हासिल होता है जैसा कि कुरआन में अल्लाह ने फरमाया है ''यक़ीनन नेक लोग बड़ी नेमतों में होंगे'' (सूरे इनफितार-१२)

यह तारीखी और बेमिसाल कारनामा असंभव नहीं, कठिन ज़रूर था

मौलाना शमसुल हक़

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की स्थापना के लगभग एक सौ तेरा साल गुज़र गए। बुजुर्गों का लगाया हुआ यह पौदा लाभकारी और प्रतिष्ठत होकर बहुत सारे काम कर गया। अल्लाह तआला पूर्वजों और संबन्धित लोगों को बेहतरीन बदला दे और इस चमन को सदा बहार रखे। आमीन

अभी अभी चन्द जमाअती मित्रों ने अत्यंत हर्षपूर्ण और तारीखी खबर सुनाई कि अहले हदीस मंज़िल के जो अपनी तमामतर खस्ताहाली, जर्जरता और ख़तरनाक हद तक दराड़ पड़ने और गिरने के क़रीब होने की हालत में था अर्से से किसी तरह डेंटिंग पेंटिंग और संशोधन और मरम्मत के ज़रिए जैसे तैसे काइम थी अब इस का तामीरे नव (नव-निर्भाण) मुकम्मल होने के करीब है। पिछले दिनों कार्य समिति की मीटिंग के मौक़े पर तीसरी मंजिल की ढ़लाई को देख कर दिल से दुआ निकली थी और जो कुछ हो सका सहयोग राशि भी भेजी थी। अब अहले हदीस मंज़िल जाने वाले अहबाब के ज़रिये मालूम करके अत्यंत खुशी हो रही है कि बाहर से दीवारें मुकम्मल हो गई हैं और बेहतरीन दाना लगने के बाद यह तारीख़ी इमारत और तारीखी काम पूरा होने के स्टेज में है। इसके लिये नाजिशे कौम व मिल्लत और जमाअत के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी हफिजहुल्लाह को लाखों मुबारकबाद पेश करता हूं और इनकी बेहतरीन टीम को भी जिन्होंने यह तारीखी कारनामा अंजाम दिया और इस तरह जमाअत की यह तारीखी तमन्ना पूरी हुई। इस अवसर से उचित रूप से मैं अपने हर दिल अज़ीज़ अमीर मोहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को कविता की एक पंक्ति पेश करता हूं। ईं कार अज़ तू आयद व मर्दा चुनीं कुनन्द, अर्थात

''हिम्मते मरदां म-द-दे खुदा'' की ऐसी मिसाल कम देखने में आती है। जमाअत के अहबाब और जमाअत के प्रतिष्ठित लोगों को यह अच्छी तरह याद है कि अमीर मोहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी साहब मोहतरम हाफिज़ मुहम्मद यहया देहलवी हफ़िजहुल्लाह की एमारत (अध्यक्षता) में जब महा सचिव के पद विराजमान हुए थे उस वक़्त जमीअत लाखों के कर्ज़ों में डूबी होने के अलावा खुद अहले हदीस मंज़िल की इमारत लाखों रूपए की लागत से मरम्मत की राह देख रही थी वर्ना धराशयाी होने के करीब थी। इस बेबसी की स्थिति में तमाम कामों को शुरू करना, बन्द पड़े कामों और परचों को जारी करना और लाखों के कर्जों की अदायगी के अलावा नये प्रोजेक्टों पर काम करना असंभव लगता था और निर्माण कार्य तो खुवाब और ख्याल था मगर आपने और आप

की टीम ने हिम्मत की और तारीख़ी काम हर सतर पर हुए। हमें याद है कि आपने अपने कामों के बारे में हर जगह लिखा है।

ईं सआदत बज़ोर बाजू नीस्त
ता न बखशद खुदाए बख़शन्दा

हकीक़त यही है कि अल्लाह तआला की शक्ति और कृपा से यह काम बल्कि कारनामे अंजाम पाए हैं, वर्ना जमाअत व मिल्लत के अहबाब अच्छी तरह जानते हैं कि इस मंहगाई जैसे हालात पैदा होने के बाद शुभचिंतकों के सहयोग का मामला कितना दुश्वार है। ऐसे में अहले हदीस कम्पलैक्स में करोड़ों का भव्य प्रोजेक्ट शुरू हुआ और इसकी दूसरी मंज़िल तक पहुंचते पहुंचते अहले हदीस मंजिल के ध राशायी का मामला दरपेश होने और इसकी अस्थाई बैसाखी खड़ी करने के लिये मैदान में उतरे तो भव्य बिलडिंग वजूद में आ गई। यह बहुत दिल गुर्दे, हिम्मत और हौसला और क्षमता का मामला है जिस को अल्लाह तआला अमीरे मोहतरम जैसे अल्लाह के शेरों के जरिए ही कराता है।

अलहम्दुलिल्लाह! अमीरे मोहतरम के तत्वाधान में यह तारीखी भव्य काम भी अंजाम दिया गया अल्लाह आप को जिन्दा और काइम रखे। आपने अहले हदीस कम्पलैक्स जहां जंगल और झाड़ झंकाड़ का बसेरा था, देखते ही देखते उसकी बाउन्डरी, उसकी भराई और भव्य (अजीमुश्शान) तीन मंज़िला मस्जिद, अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया की बिलडिंग, लाइब्रेरी, कलास रूम, मीटिंग हाल, क्षात्र, अध्यापक और प्रचारकों के लिये एक अलग इमारत, डाइनिंग हाल, कार्यकर्ताओं के लिये कमरे और किचन वगैरा भी तैयार कर दिया और सौसाल बाद पहली बार अपनी जमीन पर अपनी भव्य बिलडिंग में जमीअत, जुमा और समारोह को देख कर पूरे हिन्दुस्तान की जमाअत व जमीअत और इससे संबन्धित लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई।

मैं इस अजीमुश्शान कारनामे पर और तंग और भीड़ भाड़ वाली जगह में होने के बावजूद इतनी जल्दी अंजाम देने पर अपनी जानिब और कार्यकताओं एवं जिम्मेदारों की तरफ से बहुत बहुत मुबारकबाद पेश करता हूं और क़र्जों की अदायगी के लिये चिंतित हूं और दुआ करता हूं और अहले हदीस मंज़िल जिसके बारे में तरह तरह की शंकाएं, उसकी जर्जरता और धराशायी होने के खदशे और अफवाह और कमेन्ट्स सुन कर भी आप ने जिस संयम, दूरदर्शिता और हिकमत और मुहब्बत से यह काम कर गए, यह असंभव कहने वालों के लिये एक सबक़ है। यह तारीखी व बेमिसाल एवं अदभुद कारनामे अगर्चे अंसभव नहीं था लेकिन अत्यंत मुश्किल था। अल्लाह तआला आप को तमाम फितनों से सुरक्षित रखे और आप की क़यादत में आप की टीम से बेहतर से बेहतर काम लेता रहे। कई भाषाओं मिसाल के तौर पर उर्दू, अंग्रेज़ी, हिन्दी और कभी कभार अरबी में बिना गेप पत्रिकाओं का प्रकाशन, किताबों की छपाई, शोध और लेख वगैरह जो वहमो गुमान में न था वह बेशुमार कारनामे आप लोगों ने सख्त रूकावटों के बावजूद अंजाम दिए। यह महज़ इख्लास, मेहनत और हिम्मत व लगन का नतीजा है। बिहार में एक कीमती जमीन किस जतन और लगन से तंगदस्ती की हालत में कुछ मोहसिनीन और शुभचिंतकों के सहयोग से अमीरे मोहतरम ने अपने दौरे निज़ामत

(महा सचिव के पद पर रहते हुए) खरीदी थी मालूम हुआ कि वह इस वक़्त करोड़ से ज़्यादा कीमत की हो चुकी है। और सालाना आमदनी हो रही है ऐ अल्लाह और ज्यादा बर्कत दे। अमीरे मोहतरम यकीनन आपने जमीअत में पहली बार यह तारीखी व बेमिसाल कारनामा अंजाम दिया है जो आपके साथ जमीअत के तमाम सदस्यों के लिये सदक़ए जारिया है। हमें अल्लाह की जात से क़वी उम्मीद है कि अब उर्दू बाज़ार जामा मस्जिद दिल्ली में स्थिति अहले हदीस मंज़िल की इस आलीशान (भव्य) इमारत के मुकम्मल होने के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली की बड़ी इमारत जिसकी लागत करोड़ों में है भी मुकम्मल होगी। इन्शाअल्लाह

अमीरे मोहतरम! निसन्देह आप की पूरी टीम, नायब अमीर हज़रात, महा सचिव व कोषाध्यक्ष, संबन्धित हज़रात और पूरी जमाअत इस वक़्त मुबारकबाद की मुस्तहिक है।

अल्लाह तआला हमारे अमीरे मोहतरम, उनके मुखिलस कार्य कर्ता, शुशचिंकों और जमीअत को हासिदों की नज़रे बद से बचाए। 'अल्लाहुम्मा इन्ना नज़ूअलुका फी नुहूरिहिम व नउज़ूबिका मिन शुरूरिहिम'

नोटः- यह लेखक के अपने उदगार, हार्दिक ख्यालात, निरीक्षण और तजरबात हैं। शुक्रिया, वर्ना हक़ यह है कि यह काम महज अल्लाह की तौफीक़, मोहतरम कार्यकर्ता जिम्मेदारान, अमीर एवं सचिवगण, सदयस्यगण, शुभचिंतको, पूरी जमाअत और मुल्क व मिल्लत के सहयोग और दुआ से अंजाम पाए हैं जिस पर सभों के बेहद शुक्रगुज़ार हैं।

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी (जमाअत के ख़ादिम)

(जरीदा तर्जुमान १-१५ अगस्त २०१९)

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

स्वच्छता और स्वास्थ्य

फ़रहत क़मर

इस्लाम ने स्वच्छता (सफाई) और पवित्रता पर बहुत जोर दिया है। साफ शरीर, साफ कपड़े, साफ बर्तन, साफ घर और साफ पड़ोस, इसकी वजह यह है कि सफाई का स्वास्थ्य (सेहत) पर बहुत असर पड़ता है। सफाई न होने से शरीर के अन्दर और शरीर के बाहर गन्दगी बढ़ती है इसी तरह हर कोई अपने अपने घर को अन्दर बाहर से साफ रखना छोड़ दे तो हर तरफ गन्दगी फैल जाएगी।

हर तरफ गन्दगी फैलने का परिणाम यह होगा कि गन्दगी बढ़ने से हर तरफ कूड़े करकट के ढ़ेर दिखाई देंगे, फलों और सबज़ियों के छिलके राहों में पड़े होंगे, नालियां बन्द होने से इनमें गन्दगी पैदा हो जाएगी और हर तरफ बदबू फैल जाएगी। यह तो सब को मालूम है कि गन्दगी बढ़ने की वजह से मकखियों और कीड़ें मकूड़ों की पैदावर बढ़ जाती है क्योंकि मकखियों और कीड़ों की खूराक यही गन्दगी होती है इसी तरह बन्द नालियों और ठेहरे हुए पानी में मच्छर पैदा हो जाते हैं। इधर उधर पाखना पेशाब करने और थूकते रहने से बीमारी के कीड़ों (जरासीम) की तादाद बढ़ती है। चीज़ों के सड़ने से गन्दगी हो जाती है और इसमें भी जरासीम बढ़ जाते हैं।

मकखी मच्छर और दूसरे कीड़ें मकूड़े तो हम को दिखाई देते हैं मगर जरासीम इतने छोटे होते हैं कि खुर्दबीन की मदद के बगैर हमारी आंख उनको देख नहीं सकती। यह नन्हें मुन्ने जरासीम बस कहने को ही छोटे हैं वर्ना जहां तक बीमारी फैलाने का तअल्लुक है यह जरासीम इन्सानकी सेहत (स्वास्थ्य) के लिये बहुत ख़तरनाक होते हैं। यह नन्हें मुन्ने जरासीम भी गन्दगी में पैदा होते हैं और वहीं से मकखी, मच्छर, चूहों और दूसरे कीड़े मकूड़ों से लिपट हो जाते हैं।

मकखियां हमारे खाने पर भी बैठती हैं और हमारे बर्तनों और कपड़ों पर भी, मकखियों के द्वारा हैज़ा के जरासीम फैलते हैं, मच्छरों के काटने से हमारे खून में मलेरिया बुखार के जरासीम दाखिल हो जाते हैं, चीज़ों के सड़ने से बदबू पैदा होती है, और हवा में आकसीजन कम हो जाती है, सांस लेने के लिये साफ हवा न मिले तो हमारी सेहत अच्छी नहीं रह सकती, सांस के माध्यम से गन्दी हवा में फैले जरासीम हमारे शरीर में पहुंच जाते हैं। ख़राब खाने और गन्दे पानी के जरिए भी जरासीम हमारे शरीर में दाख़िल (प्रवेश) कर जाते हैं।

इससे मालूम हुआ कि हर प्रकार की गन्दगी हमारी सेहत को बहुत नुकसान पहुंचाती है, सेहत हर इन्सान के लिये बड़ी नेमत है, ज़रा सी बीमारी हो जाए, शरीर के किसी भाग में दर्द हो जाये तो हम कितना बेचैन हो जाते हैं, न कोई काम करने का जी चाहता है, न पढ़ने लिखने का मन करता है, न खेल में रूचि होती है न टहलने घूमने में, किसी से बात चीत करना भी अच्छा नहीं, लगता, नींद भी ठीक से नहीं आती है।

सेहत और सफाई का गहरा संबन्ध है। सवाल यह है कि सफाई के सिलसिले में हम लोगों को किन किन बातों का ख्याल रखना चाहिए।

१. खाना साफ सुथरी जगह खाना चाहिएं, खाने के बर्तन साफ

होना चाहिए, खाने से पहले और बाद में हाथ मुंह को अच्छी तरह धुलना चाहिए, खाने पर मकखियों को न बैठने दें।

२. अपने शरीर को स्नान और वज़ू से पाक साफ रखना चाहिए नाखून बढने न दिया जाये क्योंकि नाखून में मेल कुचैल जमा होने से खाने के रास्ते से शरीर में पहुंच जाते हैं इसी तरह बिस्तर तौलिया वगैरह साफ रखना ज़रूरी है।

३. किताबों और दूसरी चीज़ों को साफ सुथरी और सलीक़े से रखें और कपड़े को धूप में सुखाते रहना चाहिए।

४. आस, पास की जगह साफ रहनी चाहिए, सड़क और रास्ते में कूडा फैंकने से चलने वालों को तकलीफ होगी और हमारे पास पड़ोस में गन्दगी फैलेगी, कूड़ेदान का स्तेमाल करना चाहिए, घर के आंगन और घर के आस पास पेड़ पौदा लगाने से खूबसूरती बढ़ती है और हवा भी साफ होती है।

५. खाना हलका और भूख से कम खाना चाहिए और खूब आराम से बैठ कर चबा चबा कर खाना चाहिए।

६. हमेशा खुश रहें, गुस्सा न करें, दूसरों से जलन रखने, दूसरों से नफरत करने और दूसरों को नुकसान पहुंचाने की सोच से भी सेहत ख़राब होती है।

७.बच्चों के सेहतमन्द (स्वस्थ्य) रहने के लिये खेल कूद और वर्जिश बहुत ज़रूरी है, सुबह शाम खेतों और बागों में घूमना भी सेहत के लिये बहुत अच्छा रहता है।

प्यारे नबी मुहम्मबद स०अ०व० ने जिन्दगी गुजारने का जो तरीका हमको बताया है वह हमको सेहतमन्द और खुश रखने के लिये बेहतरीन रास्ता है। अल्लाह की इबादत करने से इन्सान की सेहत अच्छी रहती है।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम

12 वाँ आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स

पिछले वर्षों की तरह मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा प्रचारकों, अध्यापकों और अइम्मा का आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स 5 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 2019 तक आयोजित होगा।

उम्मीद है कि यह रेफ्रेशर कोर्स भी पिछले वर्षों की तरह लाभप्रद होगा। जमाअत के सुप्रसिद्ध इस्लामी स्कालर्स, शोधकर्ता, कानूनी माहिरीन अपने इलमी, और दावती अनुभव से लाभान्वित करेंगे। राज्यों के अमीरों और सचिवगण से अपील है कि वह अपने प्रतिनिधियों के नाम जल्द से जल्द भेज दें। हर राज्य से दो प्रतिनिधियों के नाम भेजें।

रेफ्रेशर कोर्स का उदघाटन सत्र 5 अक्टूबर 2019 शनिवार को सुबह दस बजे आयोजित होगा जिसमें तमाम भाग लेने वालों की शिर्कत ज़रूरी है।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्यारी बातें

❑ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने आकर मुहम्मद स०अ०व० से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल मुझे कोई ऐसा काम बता दिजिये, जिसको करने से मैं जन्नत में चला जाऊं। मुहम्मद स०अ०व०ने फरमायाः अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को साझीदार न ठहराओ, नमाज़ काइम करो, जकात दो, और रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो। (बुखारी-मस्लिम)

❑ तुम में से जो शख्स कोई बुराई देखे तो उसको अपने हाथ से खत्म करे अगर इसकी ताकत न हो तो जुबान से दूर करने का प्रयास करे, और अगर इसकी भी ताकत न हो तो दिल में इसको बुरा जाने और यह ईमान की सबसे कमज़ोर अलामत है। (मुस्लिम)

❑ मजलूम की बददुआ से बचो इसलिये कि इसके और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं। (बुखारी)

❑ अगर किसी ने अपने भाई को अपमानित (रूस्वा) किया है, उसके माल व दौलत या किसी और चीज़ से कुछ लिया है या किसी के साथ कोई जुल्म किया है तो दुनिया ही में उसको मआफ करा ले और उसकी भरपाई कर दे वर्ना क्यामत के दिन जब दीनार व दिहर्म न होंगे ताकि किसी को इनके माध्यम से खुश किया जा सके। जालिम के अच्छे कर्मों को उसके जुल्म के हिसाब से मजलूम के हिस्से में डाल दिये जायेंगे। जब उसका नाम-ए-आमाल नेकियों से खाली हो जायेगा और मजलूम का हक़ बाकी रहेगा तो मजलूम के गुनाह उसके सर पर डाल दिये जायेंगा। (बुखारी)

❑ जुल्म से बचो इसलिये कि जुल्म क्यामत के दिन अंधेरा बन कर आयेगा। (मुस्लिम)

❑ अपने भाई की मदद करो, चाहे वह जालिम हो या मजलूम। आप स०अ०व० से पूछा गया, जालिम की मदद कैसे की जाये। फरमाया कि उसको जुल्म करने से रोकना ही उसकी मदद है। (बुखारी-मुस्लिम)

❑ ऐ अबू ज़र! जब तुम्हारे घर सालन बनाया जाये तो उसमें पानी बढ़ा लिया करो और अपने पड़ोसी का ख्याल रखो। (मुस्लिम ४७५८)

❑ जो व्यक्ति अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो वह अपने पड़ोसी को दुख न दे। (बुखारी-५६७१)

❑ वह व्यक्ति जन्नत में नहीं जा सकता जिस की शरारतों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (मुस्लिम-६६)

❑ एक बार मुहम्मद स०अ०व० ने तीन बार यह वाक्य सुनाया कि अल्लाह की कसम वह व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जिसके दुख से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (बुखारी-५५५७)

❑ अल्लाह के नजदीक साथियों में सबसे बेहतर साथी वह है जो अपने साथी के हक़ में बेहतर

हो और सबसे अच्छा पड़ोसी वह है जो अपने पड़ोसी के हक़ में बेहतर हो। (तिर्मिज़ी-१८६८)

❑ जिसे यह पसन्द हो कि अल्लाह और उसके रसूल उससे मुहब्बत करें तो उसे चाहिये कि वह हमेशा सच बोले और जब किसी मामले पर उस पर भरोसा किया जाये तो वह अपने इमानतदार होने का सुबूत दे और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करे (बैहकी १५०२)

❑ हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमायाः कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम जब भी मेरे पास आते तो मुझे पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने पर इतना ज़ोर देते थे कि मुझे ऐसा लगने लगता था कि वह वरासत में पड़ोसी को हिस्सेदार बना देंगे। (बुखारी-५५५५)

❑ तुममें सब से बेहतर वह है जिसके जरिये से दूसरे इन्सानों को सबसे ज़्यादा भाइदा पहुंचे।

❑ भ्रम से बचो, क्योंकि वह बदतरीन झूठ है, दूसरों की टोह में न लगे रहो, दलाली न करो, साजिश न करो, एक दूसरे के खिलाफ डाह न रखो और अल्लाह के बन्दे बनकर भाई भाई की हैसियत से रहो। (मुस्नद अहमद २८७/२)

❑ रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है रिश्ता नाता कहता है कि जो मुझे जोड़े गा अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से जोड़ेगा और जो मुझे काटेगा अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से काट देगा। (बुखारी१४७/१)

❑ रिश्ता-नाता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जायेगा। (बुखारी)

❑ अल्लाह तआला ने रिश्तेदारी को खिताब करते हुये फरमाया क्या तू उससे खुश नहीं है कि जिसने तुझे मिलाया मैं उसे जन्नत से मिलाऊं और जिसने तुझे काटा मैं उसे (जन्नत से) काट दूं। (बुखारी)

❑ जिस व्यक्ति का अल्लाह पर ईमान हो तो उसे अपने रिश्तेदारों के साथ रिश्ता नाता जोड़े रखना चाहिये। (बुखारी)

❑ मुहममद स०अ०व०ने फरमाया उस शख्स की नाक खाक आलूद (धूल धूसरित) हो। उस शख्स की नाम खाक आलूद हो उस शख्स की नाक (धूल धूसरित) हो रसूल स०अ०व०से सहाबए किराम ने सवाल किया ऐ अल्लाह के रसूल किसकी नाक खाक आलूद हो? तो आप स०अ०व० ने जवाब दिया उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिसने अपने माता पिता को बुढ़ापे की अवस्था में पाया हो फिर उनकी खिदमत करके जन्नत में नहीं गया। (बुखारी)

अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर माओं की अवज्ञा (नाफरमानी) को हराम करार दिया है। (बुखारी) हज़रत मआज़ बिन जबल रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मुझ से रसूल स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स का आखिरी कलाम ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' हो वह जन्नत में जायेगा। (अबू दाऊद ३११६)

❑ अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने रसूल स०अ०व० को फरमाते हुए सुना कि जिस किसी मुसलमान के मरने पर चालीस ऐसे आदमी जनाज़े की नमाज़ पढ़ा दें जो अल्लाह के साथ शिर्क न करते हों तो अल्लाह तआला उनकी सिफारिश उसके हक़ में कुबूल करता है। (मुस्लिम-६४८)

सम्माननीय अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की ''भाई चारा, सह-अस्तित्व और उदारता'' के शीर्षक पर आयोजित नद्वतुल हज वल कुबरा में शिर्कत

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने सऊदी अरब के हज व उमरा मंत्रालय के निमंत्रण पर मंत्रालय के द्वारा आयोजित नदवतुल हज अल कुबरा प्रोग्राम जिसका शीर्षक ''भाई चारा, सह-अस्तित्व, और उदारता'' था, में शिर्कत की और इस अवसर पर हज और उमरा किया। इस सौभाग्यशाली यात्रा में प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस तमिलनाडो के नायब अमीर जनाब आर के नूर मुहम्मद उमरी मदनी भी सहयात्री रहे। इस कांफ्रेन्स में दोनों पदध ाारियों ने व्यवहारिक तौर पर शिर्कत की।

इस अवसर पर सम्माननीय अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने देश, समुदाय, मानवता, जमीअत व जमाअत के निमार्ण, विकास और अम्न व शान्ति के लिये दुआएं कीं, उन्होंने मुसलमानों से अपील की कि वह ईदुल अज़हा का मुबारक त्यौहार पूरी रूहानियत, अम्न व सुकून और मोहब्बत व भाई चारा के माहौल में मनाएं। ईद के अवसर पर अपने पालनहार को

अमीर मोहतरम ने अपने सन्देश में मुसलमानों से ख़ास तौर से अपील की कि वह ईदुल अज़हा के अवसर पर आस पास, मोहल्ला, गली कूचों और सड़कों की सफाई सुथराई का ख्याल रखें। कुरबानी की बाकित (अवशेष) को इधर उध ार न फैंके ताकि वातावरण दूषित न हों और जन-स्वास्थ्य प्रभावित न हो और किसी को दुख न पहुंचे। इस्लाम धर्म ने अन्दुरूनी सफाई के साथ जाहिरी सफाई का भी आदेश दिया ह

खुश करने और ईद से संबंधित कर्तव्यों को कुरआन व सुन्नत की रोशनी में अदा करें। उन्होंने जोर दिया कि पड़ोसियों और भाइयों को भी अपनी खुशी में शरीक करें और दुआओं में याद रखें। उन्होंने उपदेश दिया कि खुशी में अपने पालनहार से गाफिल न हों, उसके बन्दों की नाराजगी का सबब न बनें और पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० के तरीक़े को अपनाएं जो पूरी मानवता के लिये रहमत (दया-आगार) थे।

अमीर मोहतरम ने अपने सन्देश में मुसलमानों से ख़ास तौर से अपील की कि वह ईदुल अज़हा के अवसर पर आस पास, मोहल्ला, गली कूचों और सड़कों की सफाई सुथराई का ख्याल रखें। कुरबानी की बाकित (अवशेष) को इधर उधर न फैंके ताकि वातावरण दूषित न हों और जन-स्वास्थ्य प्रभावित न हो और किसी को दुख न पहुंचे। इस्लाम धर्म ने अन्दुरूनी सफाई के साथ जाहिरी सफाई का भी आदेश दिया है और अमल में निस्वार्थ, अल्लाह से लगाव और त्याग को दृष्टिगत रखने का उपदेश दिया। हर हाल में तकवा और संयम का ख्याल रहे जो हमेशा पैगम्बरों, सहाबा किराम, इमामों, मुहददिसीने किराम, औलिया, ओलमा और उम्मत के असलाफ (पूर्वजों) का तरीक़ा रहा है।

अम्न व शान्ति और इस्लाम

डा० रह्मातुल्लाह सलफी कटिहार

अम्न व शान्ति अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है जिसे यह नेमत देता है वह सुखमय और शान्तिमय ज़िन्दगी गुज़ारता है, इन्सान प्राकृतिक रूप से अम्न व शान्ति का आदी और इसका इच्छुक पैदा हुआ है जिसे प्राप्त करने के लिये बड़ी मेहनत करता है क्योंकि वह जानता है कि अगर उसकी ज़िन्दगी में अम्न व शान्ति होगी तो जान व माल इ़ज्जत, सतीत्व और घर खानदान सब सुरक्षित रहेंगे और जिन्दगी के तमाम काम, इबादत, रोज़गार, अधिकार सब भली भांति पूरे होंगे लेकिन अगर इन्सान को अम्न प्राप्त न हो भय और आतंक ने घेर लिया हो वह अशान्ति, इन्तेशार व फसाद और अराजकता में ऐसा लिप्त होगा कि अधिकार कर्तव्य, वाजिबात और जिम्मेदारियों को अदा करने में परेशानी होगी इसी लिये हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का-वासियों के लिये अम्न व शान्ति एवं सुरक्षा की दुआ की ''ऐ अल्लाह इस शहर को अम्न का स्थल बना दे''। (सूरे बक़रा-१२६) और नबी करीम मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः जो शख्स इस हाल में सुबह करे कि वह तन्दुरूस्त हो और अपने आप में शान्तिपूर्ण हो और उसके पास एक दिन की रोज़ी हो गोया उसके लिये पूरी दुनिया को जमा कर दिया गया'' (जामे तिर्मिज़ी-२३४६) इस हदीस से भी इन्सान की ज़िन्दगी में अम्न व शान्ति की अहमियत का पता चलता है।

इसी अहमियत के दृष्टिगत इस्लाम धर्म ने अम्न व शान्ति को मानवता के लिये अनिवार्य और अत्यन्त महत्वपूर्ण क़रार दिया और इसको हासिल करने की हर संभव प्रेरणा दी बल्कि अम्न व अमान की अहमियत और श्रेष्ठता बयान करने के साथ इसके कारण और परिणाम भी बयान किये नाहक़ कत्ल को पूरी मानवता के कत्ल के समान क़रार दिया। कुरआन कहता है ''जो कोई किसी जान को बगैर किसी जान के बदले या बिना मुल्क में फसाद करने (की सजा) के मारता है वह गोया (हक़ीक़त में) तमाम लोगों को कत्ल करता है'' (सूरे माइदा-३२) इसी तरह व्यभिचार, चोरी, डकैती, रिश्वत, सूद, जुवा, अत्याचार आतंकवाद और आत्महत्या को नाजायज़ बता कर इसकी सज़ा तय की, फसाद फैलाने वालों के बारे में कहा ''जो लोग दंगा फसाद करके गोया अल्लाह और उसके रसूल से जंग करते हैं और मुल्क में फसाद फैलाने की कोशिश करते हैं उनकी सजा बस यही है कि कत्ल किए जाएं या उनके हाथ पांव उलटे सीधे काट दिए जाएं या उनको देश से निकाल दिया जाए। (यह सब सूरतें हाकिम की राय के अनुसार हों)। यह जिल्लत उन फसादियों के लिये दुनिया में है और अभी आखिरत में बड़ा अज़ाब बाक़ी, है''। (सूरे माइदा-३३)

इस्लाम धर्म समाज में अम्न व अमान एवं शान्ति स्थापित करने के लिये केवल इन अपराधों की सज़ा ही नहीं बताई बल्कि उन कारणों को चिन्हित किया जिन के द्वारा समाज में अम्न व अमान काइम हो सकता है इसी लिये इस्लाम धर्म ने ईमान को अम्न व शान्ति के लिये अनिवार्य करार दिया है।

इसी तरह समाज के लोगों के साथ भाईचारा से पेश आने, भलाई का हुक्म देने, बुराई से रोकने के कर्तव्य को अदा एवं साधारण करने की प्रेरणा दी और गार्जियन, ओलमा, स्कूल, कालेज के टीचरों, विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं पदध ाारियों को इसकी जिम्देारियां दीं ताकि समाज हर तरह के अपराध से पवित्र रहे।

इस्लाम में आत्म हत्या हराम है

हज़रत अबू हुरैरह रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से कोई शख्स मौत की तमन्ना न करे क्योंकि वह अगर नेक होगा तो उम्मीद है कि उसके आमाल में बढ़ोतरी होगी और अगर वह बुरा है तो संभव है कि वह तौबा कर ले। (बुखारी-२६८०)

शरीर अल्लाह तआला की एमानत है इसके अंगों को छेड़छाड़ करना मना है यहां तक कि नाखून और बाल के बारे में भी विशेष निर्देश मौजूद हैं जिसकी बुनियाद पर इसको काटा या छोड़ा जा सकता है बगैर शरई दलील के किसी भी अंग में तसर्रूफ नहीं कर सकते इसीलिये इस्लाम में आत्महत्या को हमरा ठेहराया गया है और ऐसे महा पाप के करने वाले के लिये सख्त सज़ा है।

इस हदीस में इस बात की तरफ इशारा है कि कोई भी इस बात पर शक्ति नहीं रखता कि वह जब तक चाहे ज़िन्दा रहे और फिर जब वह ज़िन्दगी से तंग और मायूस हो जाए तो मौत को गले लगा ले बल्कि मौत की आशा करने से इस्लाम ने मना किया है और मौत किसी इन्सान के चाहने से नहीं आ सकती और चाहने से रूक नहीं सकती है। मौत एक अटल सच्चाई है जिससे किसी को छुटकारा नहीं है मौत का मजा हर जीव को चखना है अब कोशिश यह होनी चाहिए कि हम इस मज़ा को मीठा बनाएं न कि कड़वा। जो लोग मौत की आशा या तमन्ना करते हैं हक़ीक़त में उनकी यह आशा कायरतापूर्ण होती है वह वक़्त और हालात का मुक़ाबला नहीं करना चाहते हैं या अपनी बुजदिली, सुस्ती और कठिनाइयों पर सब्र न करके मौत को बुलाने लगते हैं, जबकि ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि कहीं मौत की आरज़ू उनके जी का जंजाल न बन जाए। यह एक हक़ीक़त है कि जब भी किसी ने इस्लाम की शिक्षाओं का विरोध करते हुए कामयाबी हासिल करने की कोशिश की या फरार का रास्ता अपनाया तो उसका यह कदम जंजाल साबित हुआ। यहां एक इंसान मौत की आशा क्यों करता है? इसलिये कि वहअपनी ज़िन्दगी से मायूस हो गया। अल्लाह की रहमत से निराश है और अपनी ज़िन्दगी में आने वाली कठिनाइयों और दुखों को अपने लिये प्रकोप समझता है जबकि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो मुसीबत भी किसी मुसलमान को पहुंचती है अल्लाह तआला इसे उसके पाप का प्रायिश्चित कर देता है। किसी मुसलमान को एक कांटा भी अगर शरीर के किसी भाग में चुभ जाए तो वह इस शख्स के पापों के लिये प्रायिश्चित (कफ्फारा) बन जाता है।

हज़रत अबू बक्र सिददीक रजिअल्लाहो तआला अन्हा का वह मश्हूर वाक़्आ जब कुरआन की आयत सूरे निसा आयत न० १२३ नाज़िल हुई तो उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल अब तो अज़ाब से बचने की कोई सूरत ही नहीं है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐ अबू बक्र अल्लाह तुम पर रहम करे और तुम्हें मआफ करे, क्या तुम पर बीमारी नहीं आती, तकलीफ नहीं आती, रंज व गम और मुसीबत नहीं आती? इन्होंने

जवाब दिया क्यों नहीं, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः यही बदला है। और मोमिन बन्दे का ईमान मज़बूत हो अल्लाह पर भरोसा हो तो दुनिया की आज़माइशों और परेशानियों से घबरा कर कभी मौत की तमन्ना नहीं कर सकता, इन्सान कभी दुख और बीमारी से जूझता है तो कभी भूख और गरीबी का शिकार हो जाता है तो कभी उस पर भय टूट पड़ता है, कभी हिलाकत व बर्बादी सताती है तो कभी समाज के झमेले उसे चैन व सुकून से जीने नहीं देते। कहने का मतलब यह है कि इन तमाम कठिन परिस्थितियों पर आत्म निरीक्षण करते हुए अल्लाह से तौबा और माफी का सहारा लेना चाहिए और अल्लाह पर भरोसा इसी तरह करना चाहिए जिस तरह करने का हुक्म है। चूंकि वह इन्सान जो मौत की तमन्ना इस निय्यत से करता है कि वह इस दुनिया के जंजाल से अपने आप को बचा लेगा लेकिन उसे पता नहीं कि मौत के बाद आने वाली ज़िन्दगी में उसकी क्या दशा हो गी कहीं ऐसा तो नहीं कि वह ज़िन्दगी के जिस जंजाल से निकल कर अपने आप को एक शान्तिपूर्ण वातावरण के हवाले करना चाह रहा था वही ज़िन्दगी उसके जी का जंजाल बन गई।

बर्ज़ख़ की ज़िन्दगी, क़ब्र का अज़ाब, आख़िरत का हिसाब किताब, यह सब उसके गले की हडडी बन गई और ज़िन्दगी जिस के ज़रिए इंसान अपनी आख़िरत संवारता है उसका दरवाज़ा अपने हाथों बन्द कर दिया अब नेकियों में इज़ाफ़ा नहीं हो सकता है इसी लिये पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कोई भी शख्स अपनी मौत की तमन्ना हर्गिज़ न करे क्योंकि वह जिन्दगी को ख़तम करने में अपनी आफ़ियत और भलाई समझ रहा है वही ज़िन्दगी उसे कामयाब करेगी इसी लिए पैगम्बर मुहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आगे फरमायाः अगर वह नेक है तो उसके आमाल में (उसकी ज़िन्दगी के जरिए) इज़ाफा हो गा और अगर वह बुरा है तो अल्लाह ताअला इसे तौबा की तौफीक (क्षमता) देगा और अगर कोई मौत की तमन्ना करना ही चाहता है तो उसे चाहिए कि वह दुनिया व आख़िरत की भलाई के साथ दुआ करे और प्यारे नबी की यह दुआ पढ़े ''ऐ अल्लाह जब तक ज़िन्दगी मेरे लिये बेहतर है मुझे जिन्दा रख और जब मौत मेरे लिये बेहतर हो तो मुझे मौत दे दे''। (बुखरी-५६७१)

इन्सानी ज़िन्दगी परेशानियों से भरी है इसी लिये सब्र और संयम का प्रदर्शन करते हुए पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और दूसरे अंबिया-ए-किराम की ज़िन्दगी के वाक़आत और सहाबा किराम रज़िअल्लाहो तआला अन्हुम की कांटों भरी सीरत को पढ़ें और पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जिन्दगी की आखिरी घड़ी की परेशानियों को न भूलें जिस को हज़रत आइशा रजिअल्लाहो अन्हा बयान करती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मर्जुल मौत की तकलीफ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा और किसी में नहीं देखी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सख्त बुखार की वजह से बार बार बेहोश हो जाते और जब होश आता तो आप की जुबान से यह शब्द निकलते ''ऐ अल्लाह मुझे रफीक आला से मिला दे''। दुआ है कि ऐ अल्लाह हमसे राज़ी हो जा और जब तक ज़िन्दा रख ईमान पर ज़िन्दा रख, सहीह इस्लामी अक़ीदा पर बाकी रख और खात्मा हो तो खैर के साथ खात्मा हो।

इस्लाम में गैर मुस्लिमों के अधिकार

निसार अहमद

इस्लाम एक विश्वव्यापी धर्म है। यह किसी खास जाति या सम्प्रदाय का मज़हब नहीं बल्कि यह संसार के सारे मानवजाति के लिए है। इसलिए इसकी शिक्षाएं सम्पूर्ण प्राणी को सम्मलित हैं। स्पष्ट रूप से इसने पूरी सृष्टि के अधिकार को बतलाने के साथ ही गैर मुस्लिमों के अधिकार को भी वर्णित किया है।

आइये हम कुर्आन व हदीस की रोशनी में गैर मुस्लिमों के अधिकार को जानते हैं:

जान व माल की सुरक्षा

इस्लाम गैर मुस्लिमों के जान व माल की पूर्ण रूप से रक्षा करता है। उनके कत्ल बल्कि धरती पर बसने वाले किसी भी मनुष्य के कत्ल को सारे मनुष्य का कत्ल बतला कर इसको हराम करार दिया। अल्लाह तआला कहता है: जिसने किसी जान को नाहक कत्ल किया या जमीन में फसाद मचाया तो गोया उसने सारे मानवजाति को कत्ल कर दिया। (सूरह माइदा-३२)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: ''जिसने किसी मुआहिद को कत्ल किया, वह जन्नत की खुशबू नहीं पायेगा। हालांकि जन्नत की खुशबू चालीस साल की मसाफत से पायी जायेगी। (बुखारी २९९५)

एक दूसरी हदीस में गैर मुस्लिम को कत्ल करने वाले को यह वईद और सज़ा सुनाई गयी कि उस पर जन्नत हराम है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं जिसने किसी मुआहिद को नाहक कत्ल किया तो अल्लाह उस पर जन्नत को हराम कर देगा। (अबू दाऊद २७४०

हमारे रसूल का यह तरीका था कि जब आप फौज भेजत तो उनसे कहते बदअहदी न करना, धोका न देना, मुसला न करना, बच्चों, औरतों और राहिबों, ईसाई आलिमों को कत्ल न करना। (मुसनद अहमद)

यही नहीं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर्फ अपनी जुबान से गैर मुस्लिमों के कत्ल न करने की शिक्षा ही नहीं दिया बल्कि इसको फतहे मकका के वक्त करके भी दिखा दिया। जब साद बिन ओबादा के हाथ में झण्डा दिया तो उन्होंने कहा ''आज बदले का दिन है'' नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब इसकी खबर होती है तो आपने उनसे झण्डा लेकर उनके बेटे को दे दिया और कहा आज रहम (दया) करने का दिन है। चुनांचे जीत के बाद उन्हीं लोगों से जो आपके जान के पीछे पड़ गये थे और आप को कत्ल करने की साजिश रची थी सबको आज़ाद और माफ कर दिया। यह है नबी की मिसाल जिसको दुनिया पेश करने से पीछे है और हमें इन्हीं चीज़ों को अपनाना है। इस्लाम ने गैर मुस्लिमों के जान व माल की सम्पूर्ण रूप से सुरक्षा की है। और यह उनका बुनियादी अधिकार है। इसलिए किसी को यह हक नहीं कि वह नाहक गैर मुस्लिम को कत्ल करे या उसके माल को हड़पे।

जुल्म न करना

किसी भी मुसलमान के लिये जायज़ नहीं कि वह किसी भी गैर मुस्लिम पर जुल्म करे। हदीस कुदसी है ''ऐ मेरे बन्दो! मैंने अपने ऊपर (किसी पर) जुल्म करने को हराम करार दिया है और तुम्हारे बीच में भी जुल्म को हराम बना दिया है तो तुम जुल्म न करना। (मुस्लिम)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी भी गैर मुस्लिम पर जुल्म करने वाले से कियामत के दिन झगड़ेंगे। हदीस हैः सुनो! जिसने मुआहिद (गैर मुस्लिम) पर जुल्म किया, या उसका हक मारा, या उसकी ताकत से ज्यादा काम लिया, या उसकी कोई चीज़ उसकी प्रसन्नता के बगैर लिया तो मैं उसके लिए कियामत के दिन लड़ने वाला हूंगा। (अबू दाऊद ३०५२ सहीह)

धार्मिक स्वतन्त्रता और उनके माबूदों को बुरा न कहना

इस्लाम गैर मुस्लिमों को पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता देता है। कुरआन में है ''दीन इस्लाम में कोई ज़बरदस्ती नहीं है''। (सूरह बकरा-२५६)

एक दूसरी जगह इस आज़ादी को यूं बयान किया गया हैः तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन व धर्म और हमारे लिए हमारा धर्म है। (सूरह काफिरून-६)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजरान के ईसाइयों को पत्र लिखा तो उसमें उनको अपने धर्म के अनुकरण और सुरक्षा की पूरी गारंटी दी। पत्र यह है ''नजरान और उनके हलीफों (दोस्तों) को अल्लाह और उसके रसूल की पनाह हासिल है। उनकी जानें, उनका धर्म, जमीन, धन उपस्थित व अनुपस्थित व्यक्ति उनके पूजास्थल और उनके गिरजाघरों की सरुक्षा की जायेगी''। (अत्तबकात इब्ने सअद)

इसी तरह कुरआन ने गैर मुस्लिमों के माबूदों को भला-बुरा कहने से रोक दिया है ''तुम उनको गाली मत दो जिसकी वह लोग पूजा करते हैं अल्लाह के अलावा क्योंकि वह लोग भी दुश्मनी में बगैर इल्म के अल्लाह को गाली दे देंगे''। (सूरह अन्आम १०८)

इस्लाम की दावत

मुसलमानों के लिये ज़रूरी है कि वह गैर मुस्लिमों को इस्लाम की तरफ बुलायें और उन्हें इस्लाम की दावत दें। अल्लाह तआला फरमाता है ''अपने रब के रास्ते की तरफ हिकमत और बेहतरीन उपदेश के ज़रीये बुलाओ और उन लोगों (गैर मुस्लिमों) से अच्छे अन्दाज़ में वार्ता करो। (सूरह नहलः१२५)

इसी तरह यहूद व इसाई से भी बेहतरीन और अच्छे अंदाज़ से वार्ता करने को कहा गया है। कुरआन कहता है। ''और तुम अहले किताब से अच्छे ढ़ंग से ही वार्ता करो''। (सूरह अन्कबूतः४६)

यह थे गैर मुस्लिमों के कुछ अधिकार इनके अलावा भी इनके कुछ अधिकार हैं। आज आवश्यकता है कि हम मुसलमान गैर मुस्लिमों के अधिकार पर गौर करें और उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। ऐसा न हो कि हमारी कोताहियों और गफलतों की वजह से गैर मुस्लिम अपने अधिकार से वंचित रहें और इस तरह वह इस्लाम के निकट न आ पायें।

अन्तिम में अल्लाह से दुआ है कि वह हमें गैर मुस्लिमों के अधिकार को पूरा करने वाला बनाये। आमीन!

❑ ❑ ❑

भौतिकवाद की तरफ बढ़ता इन्सान

नौशाद अहमद

संसार के हर इन्सान को कोई न कोई शिकायत ज़रूर है, कोई मर्ज से परेशान है, कोई कर्ज से परेशान है, कोई रोज़गार के मसले से दोचार है कोई रिश्वत से परेशान है, कोई घरेलू मसले में परेशान है। इसी के साथ दुनिया का हर इन्सान अपनी समस्या को दूर करने का भरसक और यथासंभव प्रयास करता है किसी को कामयाबी मिल जाती है और किसी को नहीं मिलती है।

लेकिन क्या कभी हज़रते इन्सान ने यह सोचा है कि हमारे इन मसाइल और समस्याओं की जड़ और कारण क्या हैं?

सबसे पहले हम तमाम इन्सानों को यह सोचना चाहिए कि हमारे इस दुनिया में आने का मक़सद क्या है, हमारे पालनहार ने हमें इस संसार में क्यों भेजा है? यह वह सवालात हैं जो हमें किसी न किसी मकसद और लक्ष्यों को पाने के लिये हर इन्सान को जो जहां पैदा हुआ है बड़ी गहराई से यह सोचना होगा कि हमारे जीवन का उपयोग और उपयोगिता क्या है।

हर इन्सान की अक़्ल यही कहती है कि हर इन्सान को नेक काम करना चाहिए, अपने काम से काम मतलब रखना चाहिए, दूसरों की भलाई के लिये सोचना चाहिए, समाज के पिछड़े लोगों की मदद करनी चाहिए, अनाथों और बेवाओं का सहारा बनाना चाहिए, कोई मर्ज से परेशान है तो उसकी बीमारी को दूर करने के लिये उसको दिलासा और सांत्वना देना चाहिए, दो लोगों के बीच में किसी तरह का विवाद हो तो ईमानदारी से दोनों के बीच सुलह सफई करवा देनी चाहिए और हमारे पालनहार ने अपनी इबादत का जो तरीक़ा बताया है उसके अनुसार उसकी इबादत करनी चाहिए।

सवाल यह है कि क्या हम इन तमाम दायित्वों और जिम्मेदारियों को निभा रहे हैं, जवाब यह है कि हम लोगों में से अधिकांश लोगा अपने इस इंसानी कर्तव्यों के निभाने में गफलत का शिकार हैं, इसकी वजह यह है हम भौतिकवाद की तरफ बढ़ रहे हैं आज हालत यह है कि झूठ को सच और सच को झूठ साबित करने का प्रयास किया जा रहा है यह सिलसिला कहाँ जा कर रूकेगा ज़्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता है लेकिन झूठ को सच और सच को झूठ साबित करने वाले अपनी आने वाली नस्ल या पीढ़ी को एक गहरे और अंधे कुएं में धकेल रहे हैं जहां केवल बर्बादी ही बर्बादी है। सच्चाई को न मानने और उसको स्वीकार न करने का मतलब यह है कि अब ज़मीर मुर्दा होता जा रहा है और स्वार्थ का विकास बड़ी तेज़ी से हो रहा है। यह भौतिकवाद की तरफ अंधाधुंध भागने का कड़वा अंजाम है। ज़रूरत इस बात की है कि हम तमाम इन्सान अपने जीवन के मकसद को पहचानें और भौतिकवाद से दूर रह कर आध्यात्मिकता की तरफ बढ़ें हमारी समस्याओं और मसाइल का हल यही है, इतिहास के पन्ने इसके गवाह हैं कि जब तक इन्सान अपनी जिन्दगी के मकसद को समझता रहा, आध्यात्मिकता से जुड़ा रहा, परेशानियां उस से दूर रही हैं, आइये हम सभी मानव जगत यह संकल्प करते हैं कि हम अपने जीवन के असल मक़सद को पहचानने की कोशिश करेंगे और हमेशा सत्य का साथ देंगे और असत्य से दूर रहेंगे।

❑ ❑ ❑

प्रेस रिलीज़

मर्कज़ी जमीअत के अहले हदीस कम्पलैक्स में स्वतंत्रता दिवस समारोह और ध्वजारोहण का आयोजन

१६ अगस्त २०१९

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई हो। आज ध्वजारोहण और हर्ष का अवसर है। हम सभी देश वासी देश भर में पूरे जोश और उस्ताह के साथ स्वतंत्रता दिवस के समारोह और ध्वजारोहण का आयोजन कर रहे हैं और इसे राष्ट्रीय सदभावना के मुबारक जजबे से मना रहे हैं। हमने जिन कुरबानियों के बदले में यह आज़ादी हासिल की थी, आज स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प करें कि राष्ट्रीय सदभावना और प्रेम व एकता के साथ आजादी का जशन मनाते रहेंगे और आज़ादी का वास्तविक फायदा उठाने और देश के निर्माण के लिये प्रयत्न करेंगे। जो क़ौमें अपने पूर्वजों की कुरबानियों को याद रखती हैं वह आज़ादी की क़द्र करती हैं और हर तरह के स्वार्थ से ऊपर उठकर देश के निमार्ण एवं विकास में अपना रोल अदा करती हैं। आज इस इतिहासिक अवसर पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अल माहदुल आली लित-तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया में राष्ट्रीय तिरंगा फहराते हुए एक बार इस संकल्प को दोहराते हैं कि देश समुदाय के निमार्ण एवं विकास के लिये हमारे बुजुर्गों और पूवर्जों ने जो सुनहरे खुवाब देखे थे इसको बिना धर्म के भेव भाव के आपस में मिल जुल कर साकार करने की कोशिश करते रहेंगे। यह उदगार और ख्यालात मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम सलफी ने कल यहां मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह और ध्वजारोहण के अवसर पर अपने टेलीफोनिक सन्देश में किया। सम्माननीय अमीर इन दिनों मक्का मुकर्रमा में हज यात्रा पर हैं।

अमीर मोहतरम ने कहा कि जिस तरह हमारे बुजुर्गों ने जाति पात, मसलक और रंग व नस्ल से ऊपर उठकर एकता व सदभावना के साथ अम्न व आज़ादी के लिये साम्राज्यवाद का मुक़ाबला किया जिसके नतीजे में आज़ादी की रोशन सुबह नसीब हुई थी उसी तरह हम आप देश व समुदाय के निमार्ण एवं विकास, अम्न व सदभावना की स्थापना और आतंकवाद के खात्मे के लिये मिल जुलकर प्रयास करते रहें तो देश निर्माण एवं विकास के अपेक्षित स्तर को पहुंच जाए गा फिर कोई भी ताक़त हमारा मुकाबला नहीं कर सके गी।

अमीर मोहतरम ने कहा कि यूं तो स्वतंत्रता संग्राम में सभी मतों एवं धर्मों के सभी लोगों ने हिस्सा लिया लेकिन मुसलमानों खास तौर से अहले हदीसों की कुर्बानियां सबसे स्पष्ट हैं जिसका एतराफ तमाम इन्साफ पसन्दों ने किया है।

स्पष्ट रहे कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अहले हदीस कम्पलैक्स में पिछले वर्षों की तरह इस साल भी आज़ादी का जश्न और ध्वजारोहण का आयोजन किया गया और इस प्रोग्राम में शामिल लोगों में मिठाई तकसीम की गई। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के मुफ्ती और आल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया के अध्यापक मौलाना मुफ्ती जमील अहमद मदनी और प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस दिल्ली के सचिव मौलाना मुहम्मद इरफान शाकिर रियाज़ी के अलावा विभिन्न हस्तियों और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कार्यकर्ता मौजूद थे इस मौके पर राष्ट्रीय तराना मधुर लय में गाया गया।